आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंधसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल- aryavidyavanshi@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल- editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुज़ी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
अमर हबीब ◆ पांडुरंग नाडकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य

छायाचित्र : अनिकेत आमटे

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में ...

संपादकीय 05
आन्तर भारती - 1 - तुका म्हणे 08
आन्तर भारती - 2 - महात्मा बसवेश्वर वचन ...09
आन्तर भारती - 3 - तिरुवल्लुवर वाणी 10
धुनी तरुणाई - नई संस्कृति की खोज 11
चिंतन भारती - 1 - वैश्विकरण 18
काव्य भारती - 1 - भूखों की कविता 21
चिंतन भारती - 2 - सभी समस्याओं की जड ...22
समाचार भारती - 1 - निधर्मी होने का 26
विषेश आलेख - 1 - दया नहीं सम्मान की 27
समाचार भारती - 2 - अ.भा.शिक्षा अधिकार मंच..30

हेमलकसा : मित्र मिलन चित्रमय विवरण

पू. बाबा आमटे सुपुत्र श्री प्रकाश आमटे के कार्यक्षेत्र हेमलकसा (जि.गढचिरौली महाराष्ट्र) में पहली बार संपन्न हुए मित्र-मिलन समारोह की छायाचित्र में झांकियां मार्च 2015 के मुखपृष्ठों पर प्रकाशित ।

संपादकीय...

माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति हमारा कर्तव्य

माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति हमारा दायित्व क्या है ? कई संदर्भों में असंख्य लेखकों, चिंतकों, दार्शनिकों आदि ने इस संबंध में काफी कुछ कहा है, लिखा है । मगर, अक्सर हम इन मुद्दों की प्रत्यक्ष या परोक्ष उपेक्षा कर ही रहे हैं, अतः ढेर सारी विडंबनाएं हमारे समाज के समक्ष मुँह बाएँ खड़ी हैं । इन तीनों से संबंधित मुद्दों के साथ जुड़ी आत्मीय भावनाओं, विचारों, मूल्यों एवं चिंतन ही अन्य सभी मुद्दों के संदर्भ में हमारी समस्याओं के लिए समाधान दे पाते हैं । यदि हम इन तीनों के प्रति निष्ठा रखते हैं, तदनुरूप मनसा, वाचा, कर्मणा कर्मनिष्ठ हो जाते हैं, कई समस्याओं का हम सही समाधान पाने में सफल हो पाते हैं ।

'आंतर भारती' के स्वप्नद्रष्टा साने गुरुजी ने अपने समय में इन तीनों के साथ कर्मनिष्ठा दर्शायी थी, अतः उनके विचार आज भी हमें प्रासंगिक लगते हैं । साने गुरुजी के चिंतन को केंद्र में रखकर हम किसी समस्या को लेकर सोचें तो आसानी से समाधान पा सकेंगे, कारण श्याम की माँ ने बालक श्याम (साने गुरुजी का बचपन का नाम) को जो संस्कार दिए थे, उन्हीं संस्कारों के बल पर माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति उन्होंने अपना कर्तव्य भरपूर निभाया है । माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के संदर्भ में साने गुरुजी के विचार किसी भी रूप में संकुचित नहीं थे । इसी कारण उन्होंने हर किसी के प्रति वही श्रद्धा व आत्मीयता दिखायी, जो अपनी माँ के प्रति उनके मानस में अंकित थी । अपनी भाषा में अमूल्य विचारों की अभिव्यक्ति आजीवन करते हुए उन्होंने सबसे यह जरूर आग्रह किया था कि, वे जितनी चाहें भाषाएँ सीखें और सबके प्रति आजीवन आत्मीयता, प्रेम, करूणा, स्नेह की भावनाएं मन, वचन, कर्म से निभाते हुए मनुष्य को मनुष्य के साथ जोड़ें । विराट मानवीयता के पक्षधर साने गुरुजी के चिंतन के परिप्रेक्ष्य में भी इन तीनों की अहमियत है ।

नरसी मेहता की पंक्तियों में पर स्त्री को माँ ही मानने (''पर स्त्री जेने मात रे'') की अटूट श्रद्धा; पराई पीड़ा को अपनी पीड़ा मानने (''जे पीर पराई जान रे'') की ध्येय निष्ठा जागृत होने के बल पर ही, गांधीजी के प्रिय भजनों में इन्हें स्थान मिला था । सृष्टि में प्रत्यक प्राणी का साकार होकर पनप पाना माँ की अनूठी भावनाओं से ही संभव हो पाता है । आज सृष्टि को चुनौति देकर परख नली में भी हम जीव के सृजन में सफलता को मानते हैं । इस उपलब्धि के बावजूद कोई ऐसे वैज्ञानिक नहीं हुए जो माँ के प्रति निष्ठा नहीं रखता हो या मातृभाव के प्रति श्रद्धा नहीं रखता हो । मातृप्रेम, त्याग, सहिष्णुता, सेवा की अनन्य भावनाओं से पोषित आत्मीयतापूर्ण देखभाल व संरक्षण के भाव के बिना कोई जीव-कण न ही सांस ले पाता है और न अपना सार्थक अस्तित्व देख पाता है ।

आए दिन महिलाओं की समस्याओं के लिए सहस्र कोनों, शतसहस्र बहानों, करोडों रंगों में मुद्दे उठाते, उछालते हम चर्चा करते ही रहते हैं, मगर संकुचित उद्देश्यों की वजह से ही कई समस्याओं के स्थायी समाधान ढूँढ पाने में असमर्थ रह जाते हैं । तमाम मुद्दों में हमारी पूरी सफलता माँ के प्रति सच्ची श्रद्धा जगाने में, माँ से जुड़ी तमाम सहज मूल्यों को अपनाने में ही है । माँ की उपेक्षा करते हुए या माँ के संबंध में इन पंक्तियों में अभिव्यक्त आशय व दायरे से जुड़ी बातों की उपेक्षाकर अन्य किसी आयाम पर हम चिंतन-चर्चा करें तो वह चर्चा संकुचित ही रह जाएगी, किसी भी संदर्भ में

सही व स्थाई समाधान दे पाने में वह अक्षम रह जाएगी । माँ सृष्टि के विराट गुणों की प्रतिमूर्ति है, माँ से जुड़ी अनन्य भावनाएँ व मूल्य सृष्टि के सार्थक अस्तित्व के लिए असीम बल है, पवित्रतम हैं । इनसे बढ़कर कोई धर्म, मर्म, ईश्वरीय तत्व सृष्टि में नहीं हैं । विराट मानवीयता की सार्थक भावना की पोषक माँ ही है । वर्तमान दौर के स्त्री विमर्श के दायरे में माँ से जुड़ी सभी मूल्यों, भावनाओं को सही मायने का पोषक माँ ही है । वर्तमान दौर के स्त्री विमर्श के दायरे में माँ से जुड़ी सभी मूल्यों, भावनाओं को सही मायने में हम प्रतिष्ठित कर पाते हैं, तभी वह विमर्श किसी हद तक सार्थक व परिणामदायक हो सकता है, अन्यथा वह संकुचित ही रह जाता है । माँ के अलावा स्त्री का जब रिश्तों के बहाने बहिन, पत्नी की भूमिकाओं में हमसे संबंध हो, तब भी हममें यदि माँ से जुड़ी तमाम आत्मीयतापूर्ण भावनाओं व संस्कारों का आत्मबल हो, हम कभी, किसी भीी स्त्री के प्रति विपरीत या विडंबनात्मक व्यवहार नहीं करेंगे । महिलाओं के प्रति सम्मान और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए समाज में पर स्त्री को माँ मानने के संस्कारों को बढ़ाने की दिशा में निष्ठापूर्ण प्रयासों की ज़रूरत है ।

मातृभाषा के प्रति हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है । भारत बहुभाषाई देश हैं । यहाँ की असंख्य बोलियों, बहुसंख्य भाषाओं के सार्थक संरक्षण की दिशा में निष्ठापूर्ण कदम उठाने की जरूरत है । इस दिशा में एक पहल के रूप में मातृभाषा-चेतना की बड़ी जरूरत है । मगर, यह एक बड़ी विडंबना है कि नौकरियों के लिए अंग्रेज़ी ज्ञान की अनिवार्यता के बहाने प्राथमिक स्तर पर दिन-ब-दिन अंग्रेजी माध्यम के स्कूल के बढ़ते जाने से भारतीय भाषा माध्यम के स्कूलों के बंद होने की नौबत आ रही है । यह दूसरी बड़ी विडंबना है कि संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्थान मिलने के बावजूद उनमें से किसी भी भाषा को उच्चतर शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाकर विज्ञान, प्रौद्योगिकी आदि ज्ञान क्षेत्रों की शिक्षा दे पाने में आज तक भी हम असमर्थ रहे हैं । भारतीय उच्चतर शिक्षा नीति की यह बड़ी असफलता है । कई देशों ने प्राथमिक से उच्चतर शिक्षा तक की पढ़ाई के लिए अपने राष्ट्र की भाषा (जहाँ अंग्रेजी से भिन्न है) को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाया है । अंग्रेजी माध्यम का विकल्प आमतौर पर केवल वहाँ की भाषा न जाननेवाले विदेशी छात्रों को ही दिया जाता है। भारत में भले ही हमने अंग्रेजी को आत्मसात किया, विकल्प के रूप में उच्चतर शिक्षा के लिए भारतीय भाषा माध्यमों को अपनाने की समस्या पर पाठ्यपुस्तकों के अभाव, अध्यापकों के अभाव आदि जैसे जो भी तर्क पेश किए जाते हैं, वे सब अभाव आज तक इसलिए जारी हैं कि भारतीय भाषा माध्यमों को लेकर चिंता न करनेवाली संकुचित शिक्षा नीति को अपनाकर हम विश्वविद्यालय संचालित कर रहे हैं । विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता के बावजूद इस समस्या के लिए समाधान न मिल पाना और आज भारत में 600 से अधिक विश्वविद्यालयों की उपस्थिति के बीच भी उच्चतर शिक्षा के तक़दीर पानेवालों की संख्या (नामांकन) में 25% का लक्ष्य हासिल कर पाने में भी हम असफल हो रहे हैं । उच्चतर शिक्षा पानेवाले भारतीय नागरिकों में अधिकांश अपनी मातृभूमि की सेवा में ही जुड़ जाते हैं, इन सबको तो कहीं इंग्लैंड या अमरीका की सेवा में जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती है । जो नौकरी धंधों के बहाने विदेश भी जाना चाहते हैं, वे इसकी प्रत्याशा में जरूरत के अनुसार निश्चय ही अंग्रेजी माध्यम का विकल्प चुन लेंगे । मगर माँ भारती की सेवा करने के लिए इच्छुक राष्ट्र सपूतों को राष्ट्र की भाषाओं में उच्चस्तरीय ज्ञान पाने के मौके से वंचित रखना मात्र एक साजिशीय नीति है, जिसका सपना लार्ड मैकाले ने एक सदी पूर्व ही देखा था । ''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति का मूल'' आदि भारतेंदु

की पंक्तियाँ जितनी मात्रा में हिंदी उद्धार के संबंध में प्रयुक्त होती रहती हैं, उतनी ही मात्रा में अन्य भारतीय भाषाओं के उद्धार के संबंध में कई कर्मठ कवियों, चिंतकों की पंक्तियों को हम याद करते रहते हैं । वर्तमान संघ सरकार की ओर से मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 21 फरवरी, 2015 को 'मातृभाषा दिवस' से रूप में मनाने के बहाने अखबारों में रंगीन विज्ञापन जारी कर दिया है । यदि इन विज्ञापनों का आशय सचमुच भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा है, तो तुरंत सभी राज्यों में स्थानीय विश्वविद्यालयों में वहाँ की भाषाओं में शिक्षा माध्यम का विकल्प शुरु कर दिया जाना चाहिए । इस विकल्प के शुरु होते ही अपने आप सभी भाषाओं में पुस्तकें तैयार होना शुरू हो जाएगा । ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं मे अनुवाद करवाने की संकल्पना से गठित राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की परिकल्पना को साकार बनाकर आज तक जो भी काम किया गया है अथवा जो भी इस मिशन की संकल्पनाएँ हैं, वह साकार हो पाना और उनकी सार्थकता भी इन्हीं कदमों में होगा । भारत सरकार को यह भी ध्यान देना जरूरी है कि अपने 'डिजिटल इंडिया' परियोजना में सभी भारतीय भाषाओं के उद्धार की चेतना हो और डिजिटल साक्षरता का आधार भी भारतीय भाषाएँ ही बने । भारतीय भाषाओं में डिजिटल सुविधाओं के विकास में व्यापारिक दृष्टि को समाप्त करते हुए भारतीय भाषाओं के उद्धार के प्रति सेवा की दृष्टि जगानी भी अपेक्षणीय है । सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलकर 75 साल बीतने के बावजूद, सही मायने में उसे प्रतिष्ठित करने का सपना साकार नहीं हो पाया है । इस संवैधानिक प्रावधान के बावजूद डिजिटल परिवेश में हिंदी की तड़प जारी है, कई दृष्टियों से हिंदी कंम्यूटिंग की उपेक्षा जारी है, ऐसे में अन्य भारतीय भाषाओं की स्थिति पर कोई व्याख्या करने की जरूरत ही नहीं है, दयनीय स्थिति स्पष्ट है । हिंदी को लेकर हिंदी प्रदेश की कोई बड़ी चिंता नजर ही नहीं आ रही है । हिंदी प्रदेशों के हिंदी अखबार 'हिंग्लीष' के प्रयोग में बड़ा आनंद ले रहे हैं । ऐसे दौर में, राजभाषा हिंदी के प्रति सरकार की यदि सार्थक निष्ठा है तो हिंदी के उद्धार के लिए निस्वार्थ, कर्मठ एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं की सेवाएँ प्राप्त करने की पहल करें, इसमें धन की लालसा कहीं न हो, तभी सही काम हो सकता है ।

''वैश्विक स्तर के चिंतन और स्थानीय स्तर पर कार्य'' के पक्ष में बुद्धिजीवियों द्वारा दलील दिया जाता है । मातृभूमि के प्रति कर्तव्य निभाना संकुचित राष्ट्रीयता हरगिज नहीं है । इन्सानियत की भावनाओं को अपनाकर कार्य करने से 'जय जगत' की संकल्पना साकार हो पाती है । ''भारत जोड़ो'' की संकल्पना समूचे हिंदुस्तान में राष्ट्रप्रेम, मानवीयता और वैश्विक भाईचारे की भावनाओं को फैलाने की दृष्टि से विकसित हुई है । भारतीय भाषाओं के माध्यम से इस श्रेष्ठ संदेश को फैला सकते हैं । माँ, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य की चेतना हमेशा ही प्रासंगिक मुद्दे हैं । इनकी ओर हमारी निष्ठा जगाने की दिशा में संकल्पबद्ध होकर कर्मनिष्ठा दिखाने से ही साने गुरुजी जैसे राष्ट्र-सपूतों के सपने साकार होकर विराट मानवीयता का पनपना संभव है । जननी जन्मभूमि और अपने देश की वाणियों के प्रति सबमें व्यापक निष्ठा जागृत करने की दिशा में 'आंतर भारती' के सभी कार्यकर्ता सदा सक्रिय भूमिका निभाएँ, यहीं आत्मीय अपेक्षा है ।

होली, महिला दिवस, वसंतोत्सव, उगादि आदि पर्वों के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

– डॉ.सी.जय शंकर बाबु

नाहीं घाटावें लागत

नाहीं घाटावें लागत । एका सितें कळें भात ।। ध्रु ।।
क्षीर निवडतें पाणी । चोंची हंसाचिये आणी ।। १ ।।
आंगडे फाडुनि घोंगडे करी । अवकळा तये परी ।। २।।
तुका म्हणे कण । भुसीं निवडे कैंचा सीण ।। ३ ।।

English Translation

It is enough to test a single grain of rice
Naheen ghaataave laagat, ekaa siten kalen bhaat

It is enough to test a single grain of rice,
In order to know whether the rice is cooked.
The swan distinguishes milk from water
Just by dipping its beak in the drink.

No one should parade in the Knotted Number
Stiched out of a royal robe.
Says TUKA, that's why there should be fakes,
In order to choose good grain from chaff.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram Lakaki Rasta, Pune - 411 016

आंतर भारती - 2

महात्मा बसवेश्वर वचन

–डॉ.इरेश स्वामी

कन्नड वचन

बच्चलद नीरू तिळियादरेनु ?
सल्लद होन्नु मत्तेल्लिद्दरेनु ?
आकाशद माविन फलवेंदरेनु ?
कोय्यलल्लि मेल्ललिल्ल कूडलसंगन शरणर
अनुभवविल्लदिद्दरू एल्लिद्दरेनु ? एंतादरेनु ?

हिन्दी काव्यानुवाद

स्नानगृह का पानी साफ रहे तो क्या?
अशुद्ध सोना कहीं भी रहे तो क्या?
आकाश के आम फल की तरह
अनुभव न होने वाले कूडल संगके
शरणों को न जानने वाले
कहीं भी रहे तो क्या ? जैसे भी हो तो क्या?

सारांश :

कूडल संगम शरणों को न समझनेवाले लोग कहीं भी रहे वो कुछ भी रहे तो उनसे कोई प्रयोजन नहीं जैसे हमामखाने का (स्नानगृह का) पानी साफ रहे तो क्या लाभ ? अशुद्ध (अयोग्य) सोना कहीं भी रहे तो क्या फायदा ? आकाश के आम के फल की तरह उसे काटकर प्रत्यक्ष अनुभव न लेने से जैसे उस वस्तु का होना न होना बराबर समझ लेना व्यर्थ है ! कूडल संगम देव के भक्तों का होना उनको समझ लेना सार्थक जीवन है ।

'विद्या' 12 ब्रह्मचैतन्य नगर, सोलापूर- 413 004
0217-2342194, 9371099500

आंतर भारती - 3

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल–संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हायकु अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु
प्रथम खंड – अरतुपाल (धर्म खंड)
इल्लरवियल् (गृहस्थ–धर्म)
अध्याय 8. अन्बुडैमै (प्रेमभाव)

अन्बोडु इयैन्द वळक्केन्ब आरुयिक्कु
एन्बोडु इयैन्द तोडर्बु । (कुरल – 73)
प्रेम हेतु ही
आत्मा पाती देह को –
कहते भी हैं ।

भावार्थ – यह कहते हैं कि प्रेम का आनंद लेने के लिए ही आत्मा शरीर को पाने के लिए तैयार हो जाता है ।

अन्बुईनुम् आर्वम् उडैमै अदुईनुम्
नण्बेन्नुम् नाडाच् चिरप्पु । (कुरल – 74)
प्रेम को बढ़ाती दोस्ती;
हित भी देती सच्ची दोस्ती ही ।

भावार्थ – प्रेम से ही स्नेह बढ़ जाता है और सच्ची दोस्ती ही असीम हितकारी होती है ।

आत्मकथन : धुनी तरूणाई

नयी संस्कृति की खोज करनेवाली प्रयोगशाला

-अमर हबीब

बाल्य अवस्था से ही मुझे खेलकूद का शौक था । प्राथमिक स्कूल में था तब कबड्डी की टीम का कॅप्टन था । खेल की धुन के कारण ही मैं राष्ट्रसेवा दल की शाखा में गया । वहां जी भर कर खेला जा सकता है , ऐसा दिखने पर रोज स्कूल की छुट्टी के बाद शाखा में जाने लगा । वहां जी भर के खेलता था । अंधेरा होने लगा कि घर की याद आती थी । शाखा में दल-नायक बना, शाखानायक बना । सेवादल का कलापथक था । आदर्श था 'मनोरंजन के माध्यम से लोकशिक्षा' । इसके द्वारा लोकनाट्य प्रस्तुत किये जाते थे । मैंने भी उसमें छोटी-बडी भूमिकाएँ की थीं । सेवादल के काम में रस आने लगा । अवांतर पढ़ना शुरू किया । हम 'फॉलोवर्स क्वार्टर्स' में रहते थे । आगे किसी चाल के सामने होती है वैसी गली थी । मुस्लिमों के घर अधिक थे । बच्चे स्कूल नहीं जाते थे । गली के बच्चों को स्कूल पहूँचाया । यह हमारा प्रथम 'सोशल वर्क' । आयु के साथ काम का स्वरूप बदलता गया । अब काले बाजार में पहुँचनेवाला रॉकेल पकडकर उसे गोरगरीबों में बांटने लगा । किसीका निषेध तो किसीके समर्थन में पत्रक निकाले मोरचा, घेराव, उपोषण ऐसे कार्यक्रमों में मैं सबसे आगे रहता था । सभा-सम्मेलनों मे अनाउन्समेंट का काम मैं उत्साह के साथ करता था । टांगा होता था । उसके अगले हिस्से में मैं और टांगेवाला, पीछे, स्पीकरवाला बैठता था । पूरे गांव में कार्यक्रम के विषय में बताते हुए घूमते थे । मेरी आवाज़ माईक के लिए सूट होती थी । लोग ध्यान से सुनते हैं यह देखकर मजा आती थी । सरकारी वाहनों का व्याक्तिगत दुरुपयोग दिखने पर उसे रोककर उसकी हवा छोडते थे और मैं वॉनेट पर खडे होकर भाषण देता था । इसी दरम्यान गांधी लोहिया, साने गुरुजी इन्हें पढ़ा । मार्क्सवाद को समझने का प्रयत्न किया । मेरे इस उद्योग से माँ-पिताजी परेशान थे । उन्हें लगता था मैं, मेरे बड़े भाई जैसा, कक्षा में प्रथम आऊं । खूब पढूं । बड़ा बनूं । पिताजी को लगता था मैं वकील बनूं । माँ को लगता था, कुरान को पूरी तरह याद कर 'हाफीज' बनूं । उनकी मुझसे जो अपेक्षा थी वह यथोचित ही थी । मॅट्रिक की परीक्षा देने के बाद मैं देहली भाग गया था । गांव में हलका काम करने से पिताजी की प्रतिष्ठा को आंच आएगी, लेकिन कुछ कष्ट करें और खुद ही कमाएं, इस इच्छा के कारण गांव छोड दिया था । सीधा देहली पहुँचा । चाहे जो काम किये । दुर्भाग्य से दो महिने में ही पकड़ा गया । गांव वापस आना हुआ । आंबेजोगाई में रहा तो मैं पढ़ाई नहीं करुंगा, ऐसा सोचकर पिताजी ने मुझे मॅट्रिक के बाद मामा के पास देहली भेज दिया । उस दरम्यान में मेरी माँ और दो बहनें वहीं थीं । पिताजी हमारे खर्चे के लिए मनिऑर्डर से पैसे भेजते थे । जामिया

मिल्लिया में पी.यु.सी.(प्री युनिव्हर्सिटी कोर्स) होने के कारण वहाँ मुझे दाखिला मिला । हमारी कक्षा में देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आये छात्र तो थे ही, इसके अतिरिक्त फिजी से आयी एक छात्रा भी थी अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवाले और भिन्न-भिन्न संस्कृतियों की विरासत वाले समूह का अनुभव प्रथम वहां मुझे मिला । इसी दरम्यान मैंने हरिवंशराय बच्चन जी की 'मधुशाला' पढ़ी । उसका कुछ अनुवाद मराठी में करके उसे बच्चन जी के पास भेजा । उन्होंने तुरन्त एक अच्छी प्राप्ति-सूचना भेजी । दिल्ली में मैं गांधी पीस फाऊंडेशन में जाता था । वहां काफी कार्यक्रम होते थे । जयप्रकाश नारायण, खान अब्दुल गफारखान आदि गांधीवादी नेताओं को मैं दूर से देखता था, सुनता था । कुछ समझ में नहीं आता था लेकिन वहां जाना, सबकुछ सुनना मुझे अच्छा लगता था । परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ । लेकिन अगले वर्ष फिर आंबेजोगाई वापिस आना पड़ा ।

आंबेजोगाई में सेवादल के ज्येष्ठ लोग मार्गदर्शन करते थे । बाद में ऐसे मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं रही । उलट ऐसे मार्गदर्शन के प्रति उबासी पैदा हुई । आंबेजोगाई में रहे तो मार्गदर्शन लेना विवशता हो जाएगी यह जानकर मैं बीड़ गया । एक कॉलेज मे प्रवेश लिया । परिवार से आर्थिक सहायता नही लेनी थी, न ही दोस्तों-मित्रों से । दूसरे गांव में तो रहना था, अतः कुछ काम करते हुए, कुछ श्रम करते हुए, पैसे स्वयं ही अर्जित करते हुए पढ़ना था । साथ में विद्यार्थियों के आंदोलनों के साथ भी जुड़ा रहना था । थी तो बड़ी कठिन कसरत । मैं एक प्रेस में काम करने लगा । वहीं रहता था । जैसा संभव हुआ, होटल में खाना खाता था । विद्यार्थियों के असंतोष का वह समय था । रोज कुछ न कुछ कार्यक्रम रहता ही था । इसी दरम्यान मैंने बीड़ में 'जनता झंडावन्दन' का कार्यक्रम आयोजित किया था ।

वर्ष **1974** में मराठवाड़ा में विद्यार्थियों का जोरदार आंदोलन हुआ । मैंने भी इस आंदोलन में हिस्सा लिया । सेवादल के एक शिबिर के निमित्त देवलाली गया था । वहां एस.एम.जोशी जी आये थे । उन्होंने पूछा ''अक्कलकुवा में वसुधा धागमवार नाम की एक वकील महोदया आदिवासियों की जमीन की समस्या के प्रति संघर्ष कर रही हैं । क्या उनकी सहायता के लिए आपमें से कोई जा सकेगा '' ? मैं तुरन्त तैयार हो गया । देवलाली से निकलकर सीधा अक्कलकुवा पहुँचा । अक्कलकुवा यह धुलिया जिले में एक तहसील मुख्यालय है । सातपुडा की पहाडियों में छोटी-छोटी बस्तियों में बसे आदिवासी यहाँ मिलेंगे । वसुधाताई की सहायता करते-करते मैं यहां कई बातें सीखा । वहां एक साल तक रहा । अस्वस्थ हुआ इस कारण वसुधाताई ने ही मुझ आंबेजोगाई वापस भेजा । आंबेजोगाई पहुँचकर मुश्किल से एक हप्ता भी नहीं हुआ होगा कि इंदिरा गांधी ने आपात्काल घोषित किया । हम हमेशा की तरह बालक-मंदिर में बैठक के लिए एकत्र हुए । घटनाके प्रति निषेध व्यक्त किया । चौक में फलक भी उगाया । तुरन्त पुलिस हरकत में आयी । पुलिस ने 'मीसा'

के अन्तर्गत गिरफ्तार किया। आंबेजोगाई से बीड़ होते हुए हमारी यात्रा को अंततः नासिक रोड मध्यवर्ति कारागृह में विराम मिला। 19 माह वहीं बिताए वास्तव में इस समय हमें अलग-अलग विषयों का गहराई से अध्ययन करने का अवसर मिला। भारतीय संविधान, ज्ञानेश्वरी, इस्लाम, मार्क्सवाद, भिन्न-भिन्न विचार धाराएँ, इतिहास इन विषयों पर विशेष जानकारों की कक्षाएँ लगती थी। कारागार में मैंने कइयों के चरित्र पढ़े। कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास, प्रवासवर्णन और न जाने क्या-क्या पढ़ा। नासिक कारागार में 1800 राजबंदी थे। उनमें सबसे अधिक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थे। उसके सिवाय जनतांत्रिक समाजवादी, मार्क्सवादी, कृषक मजदूर पार्टी, युवक क्रांतिदल, जमाते-इस्लामी, सर्वोदय आदि कई विचारधाराओं से जुडे कार्यकर्ता थे। शुरू में मैं आयु की दृष्टि से सबसे छोटा था, अविवाहित था। परिवार की चिन्ता नहीं थी। इस कारण मैं अन्य राजबंदियों के समान चिन्ताग्रस्त नहीं रहता था।

नासिक जेल में ही सुधाकर जाधव और शेखर सोनाळकर इनसे परिचय हुआ शेखर मूलतः जळगाव से था। अभी-अभी सी.ए. बना था। उसकी प्रखर बुद्धिमत्ता का जेल में कौतुक होता था। सुधाकर जाधव शांत स्वभाव का था। जे.पी.नेतृत्त्व में हुए संपूर्ण क्रांन्ति आंदोलन में वह बिहार जाकर साम्मिलित हुआ था। सर्वोदय की युवा आघाडी थी 'युवा शांति सेना'। वह इस सेना में काम करता था। कारागृह में बने ये मित्र आगे के कई वर्षो तक साथ में काम करेंगे, ऐसा उस समय नहीं लगा था।

इंदिरा गांधी ने चुनावों की घोषणा की। जे.पी.ने चुनावों की इस चुनौती को स्वीकार किया। राजबंदियों की जेल से रिहाई आरंभ हुई। हिटलर ने इसी तरह चुनाव घोषित किये थे। चुनाव एकतरफा हुए थे। चुनावों में हिटलर भारी बहुमत से विजयी हुआ था। उसके बाद उसने जर्मनी पर अधिनायकवाद थोपा था। हमने यही सुना था। वही दिमाग़ में था। इस कारण जे.पी.का निर्णय गलत लगा। राजबंदियों को मुक्त करने उन्होंने यह समझौता किया हो, ऐसा विचार मन में उभरा। इंदिरा गांधी फिर चुनाव जीतेगी और तानाशाह बनेगी, ऐसा लगा। फिर जेल में आना नहीं, भविष्य में आवश्यकतानुसार भूमिगत रहते हुए कार्य करते रहना है, यह पक्का निश्चय किया। जेल से छूटने के बाद सभी राजबंदी अपने-अपने घर गये। लेकिन मैं मुंबई पहुँचा। इंदिरा गांधी के अधिनायकवाद के प्रति रणनीति बनाने वहाँ एक बैठक थी। पहुंचने में विलंब हुआ। बैठक समाप्त हो गयी थी। वहां रुकना संभव नहीं था। इस कारण तुरन्त पुणे आया। पुणें में 'शनिवार वाडे' के सामने जनता दल की सभा थी शुरू में लगा इस सभा में कोई नहीं आएगा। सभा शुरू हुई और चींटियोंकी बांबी टूटने के बाद जैसी उनकी फौज निकलती है, उस तरह सभा में भीड़ उमड़ पड़ी। वह भीड और लोगों में उत्साह देखने के बाद लगा मैं राजनीति में एकदम अनपढ़ हूँ। मैं अपने आप पर शरमिंदा हुआ, मानों किसीने मुँह पर चांटा मारा हो। जे.पी. का निर्णय उचित

था यह चुनावों के नतीजों के बाद स्पष्ट हुआ।

औरंगाबाद चुनाव क्षेत्र से बापू काळदाते संसद के लिए उम्मीदवार थे। उनका संदेश मिला। इससे पहले वे एक बार केज से विधानसभा के लिए चुनाव लड़ चुके थे। तब उनसे मेरा परिचय हुआ था। नासिक रोड़ जेल में हम एकसाथ थे। मैं तुरन्त औरंगाबाद पहुँचा। मुझे चुनाव प्रचार कार्यालय संभालने का दायित्व दिया गया। सुधाकर जाधव भी आया। उसका मूल गांव पैठण तहसील में था लेकिन घर तो औरंगाबाद शहर में पैठण गेट के पास था। मेरा मुकाम बापू के घर में ही था। चुनाव जबरदस्त तरीके से हुआ। बापू जीत गए। दिल्ली में पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकार बनी। इंदिरा गांधी को जबरदस्त हार झेलनी पड़ी।

जयप्रकाश नारायण यह नाम सेवादल के शिक्षाकक्ष में सुना था। मेरे मन में उनकी प्रतिमा 1902 आंदोलन के हिरो, इस रूप में थी। दस्यु समर्पण और भूदान आंदोलन इन कार्यक्रमों में उनके सहभाग के विषय में सुना था। 'युवा शांति सेना' यह सर्वोदय की युवा विंग थी। बिहार आंदोलन आरंभ हुआ तब उनके द्वारा छात्रों की संघर्ष समितियां बनायी गयी थीं। भिन्न-भिन्न छात्र संगठनों के नेता और किसी भी संगठन से न जुडे हुए विद्यार्थी इस संघर्ष समिति से जुड गये थे। इन संघर्ष समितियों के मार्फत कई कार्यक्रम क्रियान्वित किये जाते थे। जे.पी.जी ने 'संपूर्ण क्रांति' का उद्घोष किया। यह व्यवस्था परिवर्तन का कार्यक्रम था। इसे कार्यान्वित करने के लिए, सत्ता से दूरी रखते हुए जनता में काम करनेवाले युवाओं का एक मजबूत संगठन 'छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी' बनाया गया। 'युवा शांति सेना' को इस संघर्ष वाहिनी में विसर्जित किया गया।

आपात्काल समाप्त हुआ। चुनाव हुए। जनता दल की सरकार बनी। ऐसी परीस्थिति में छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी घोषित की गयी। उसमें सुधाकर का नाम था। अबतक जे.पी.की किड़नी की तकलिफ बढ़ गयी थी। वे मुंबई आये थे। उनका मुक्काम एक्सप्रेस टॉवर में था। महाराष्ट्र कार्यकारिणी भी घोषित की गयी थी। अमरावती के किशोर देशपांडे को संयोजक बनाया गया था। कार्यकारिणी में मेरा भी नाम था। सुधाकर ने पूछा ''जे.पी.से मुलाकात का कार्यक्रम तय हुआ है। क्या मुंबई आएगा?'' जे.पी.इस व्यक्ति के विषय में मुझमें बडा कुतुहल था। मैं एकदम राजी हुआ। जे.पी.जी से भेंट हुई, वास्तव में कहना चाहिए उनका दर्शन हुआ। चन्द्रकान्त वानखेडे शिबिर संयोजक था। इस शिबिर में पहुँचे युवा-युवतियों का उत्साह अपूर्व था। इसी शिबिर से महाराष्ट्र में संघर्ष वाहिनी का बीजारोपण हुआ।

मेरा जन्म मुस्लिम परिवार में हुआ। इस परिवार को सामाजिक कार्य का बिलकुल भी गंध नहीं था। पिताजी उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर जिले से तो माँ देहली से

थी । पिताजी निवृत्त सैनिक तथा कृषक परिवार से थे । माँ सुसंस्कृत तथा शैक्षणिक पार्श्वभूमिवाले परिवार से थीं । चाचा निज़ाम रियासत के हैदराबाद में इंजिनिअर के तौर पर नौकरी करते थे उन्होंने पिताजी को बुला लिया । माँ-पिताजी का कुछ ही समय पहले विवाह हुआ था । नवविवाहित जोड़ा मराठवाडा में पहुँचा । केज कस्बे में कुछ दिन रहकर उन्होंने अपनी बस्ती आंबेजोगाई में स्थायी की । हम सब भाई-बहनों का जन्म यहीं हुआ । दो बहनें और हम दो भाई । मैं सबमें छोटा । इस गांव में हमारा कोई रिश्तेदार नहीं था । गांव में ही क्यों, पूरे महाराष्ट्र में नहीं था । पिताजी निर्माण कार्य में ठेकेदारी करते थे । उन्हें कामचलाऊ ऊर्दू भाषा पढ़ते-लिखते आती थी । माँ एकदम ही निरक्षर । पिताजी ने बहनों का दाखिला तो ऊर्दू माध्यम के स्कूल में लिया था लेकिन हम दो भाइयों को मराठी माध्यम के स्कूल में भेजा था । ऐसा उन्होंने क्यों किया ? पता नहीं । लडकियों को पढ़ाना और लड़कों को मराठी माध्यम से पढ़ाना ये, उस समय, बडे हिम्मत के ही काम थे । लेकिन पिताजी ने यह निर्णय लिया था । मराठी माध्यम के स्कूल में पढने से मेरा क्षेत्र विस्तारित हुआ । सेवादल के कारण पूरी दुनियाँ के लिए दरवाजा खुल गया और वाहिनी के कारण दुनिया की ओर देखने की दृष्टि मिली ।

वाहिनी का काम शुरू किया उस समय मैं मुश्किल से 21-22 साल का था । इतनी छोटी आयु में क्रांति, समाज परिवर्तन, दर्शन आदि क्या समझता? मोटे-मोटे तौर पर इतनाही समझता था कि सारे मनुष्य समान हैं, किसीपर अन्याय नहीं होना चाहिए, किसी के प्रति पक्षपात नहीं होना चाहिए । यही प्रेरणा थी । मूल पूंजी इसी प्रेरणा की थी । वर्ग संघर्ष, शोषणमुक्त समाज, समाजवाद, जाति निर्मूलन, धर्म निरपेक्षता आदि शब्द सुने थे । ये संकल्पनाएँ स्पष्ट होने के पहले, मेरे दिमाग में एक संकल्पना स्पष्ट थी कि हम मनुष्य हैं । मनुष्य होने का भान यही प्रथम अवधान था । मनुष्य के रूप में जीना होगा तो जाति-धर्म के संस्कारों की श्रृंखलाएँ काटनी होंगी । यह भान रोमांचित करनेवाला था । बादलों के पीछे छुपा सूर्य, बादल हटते ही जैसा आँखो को चकाचौंध कर देता है, वैसी अनुभूति होने लगी थी । जाति-धर्म के संस्कारों की बेड़ियाँ हटा देने की प्रेरणा जैसी मुझमें थी, वैसीही वाहिनी के सभी मित्रों में थी । शायद इसी कारण हम सभी इतनी आत्मियता के साथ एकत्र आये थे ।

महाराष्ट्र में संघर्ष वाहिनी के प्रथम टीम में किशोर, चन्द्रकान्त (अमरावती), सुधाकर और स्वयं मैं (औरंगाबाद) और शेखर (जलगांव) थे । किसीके पास भी बाप-दादाओं के नामों की कोई विरासत नहीं थी । जो कुछ पहचान थी वह अपने कृतित्व के आधार पर प्राप्त हुई थी । वह भी कुछ बड़ी नहीं थी । इसी दरम्यान डॉ, कुमार सप्तर्षी, डॉ,अरूण लिमये, नामदेव ढसाळ राजा ढाले, प्रमोद महाजन, बाळ आपटे आदि युवा नेताओं का सिक्का चलता था । उनकी तुलना में हम एकदम अनजाने थे । हरेक नयी जगह

नई टीम बनाते समय हमें अ-आ से शुरूआत करनी होती थी । जे.पी.के नाम के कारण सुर जुड़ जाते थे । लेकिन आगे का निर्माण हमेंही करना पड़ता था । प्रत्येक कार्यकर्ता को एक अग्निपथ से गुजरना आवश्यक था ।

महाराष्ट्र में संघर्ष वाहिनी के प्रथम टीम के सदस्यों में सुधाकर को छोड दिया तो सभी अविवाहित थे । मेरा विवाह केवल निश्चित हुआ था । सभीकी आयु पचीस वर्ष से कम ही थी । ऐसा होते हुए भी, अन्य किसी भी समकालिन परिवर्तनवादी संगठन की तुलना में, वाहिनी में युवतियों की संख्या सबसे अधिक थी । यह बात आश्चर्यजनक ही नहीं तो अभिमानास्पद भी थी । किसी संगठन में बुजूर्ग मनुष्य और वयस्क महिलाएँ हों तो लडकियों कों वहाँ भेजने परिवारों को परेशानी नहीं होती । लेकिन जहां समवयस्क अविवाहित लड़कों की बहुतायत है, वहां अगर लडकियाँ जाती होंगी । तो पालकों की चिन्ता होना स्वाभाविक है । हो सकता है जयप्रकाश नारायण इस नाम के कारण इन युवतियों ने हिम्मत की हो । अधिकतर लडकियाँ निम्नमध्यम वर्ग से आयी थीं । इस वर्ग में जाति-धर्म का सबसे अधिक प्रभाव होता है । फिर भी ऐसे परिवारों से बड़ी संख्या में लडकियाँ वाहिनी में आयीं । कइयों के परिवार में इसके प्रति विरोध था । उसे उन्होंने सहन किया । प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करती रहीं । लड़कों की तुलना में लड़कियों को परिवार का विरोध अधिक सहना पडा । उनके इस संघर्ष के लिए हमारे मन में उनके प्रति आदर की भावना थी । इस कारण हमारे व्यवहार से इन युवतियों में गलतफहमी न हो इसकी ओर हम विशेष ध्यान देते थे । ये युवतियाँ घर से बाहर निकली हैं, उन्हें वाहिनी में विश्वासपूर्ण वातावरण मिलना ही चाहिए अन्यथा वे फिर वापिस बंदिस्त हो जाएंगी और जिसे हम संपूर्ण क्रांति कहते हैं, वह कभी हो नहीं पाएगी । ऐसेही विचार दिमाग में मंडराते थे । हम सभी पहली ही बार सार्वजनिक काम के लिए उतरे थे । परिवार के बाहर के व्यक्ति के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए, इसका पता नहीं था । नयेपन के कारण उभरनेवाला संकोच भी था । हो सकता है इस कारण भी वाहिनी में आनेवाली युवतियों को हमसे असुरक्षितता का अनुभव न हुआ हो । वाहिनी में काम करनेवाले व्यक्तियों के व्यवहार से युवतियों के परिवार के लोग जब परिचित होते थे तो उनका विरोध कुछ कम होता था । इस संदर्भ में शेखर सोनाळकर ने किया काम सर्वोत्तम था, ऐसा मेरा विचार है।

परिवार की स्त्री सदस्यों के साथ एक मर्यादा के बाहर खुलकर बात नहीं कर सकते, संकोच होता है । इस कारण कई जिज्ञासाएँ वैसी ही रह जाती हैं । वाहिनी में आयीं लडकियाँ बहादुर थीं । उनसे खुलकर बातें की जासकती थीं । ये लडकियाँ स्त्री की आज़ादी के लिए अधिक चौकन्नी तथा अधिक आग्रही थीं । उनके साथ किये गये संवादों से हम कई, नई-नई बातें सीखते रहे । लेकिन कुछ महिला साथियों का अतिवादी स्त्रीमुक्तिवाद जंचा

नहीं । उसे मैंने बिलकुल नजरअंदाज कर दिया ।

वाहिनी का नेटवर्क कई राज्यों में था । मै राष्ट्रीय संयोजक था तब लगभग चालीस हजार सदस्यता फॉर्म भरे गए थे । उनमे तामिळनाडू से लेकर तो त्रिपुरा तक के थे । राष्ट्रीय संयोजक होने से मुझे और पूरे देश में घूमने का मौका मिला। केवल पर्यटन करनेवालों को कुछ चुनी हुई जगह ही देखनी होती है । तीर्थयात्रा करनेवाले केवल धार्मिक स्थलों के ही दर्शन करते हैं । वाहिनी जैसे संगठन के कार्यकर्ताओं से मिलता है, वहां के कार्यक्रमों में हिस्सा लेता है, शिबिर में चर्चा होती है । भिन्न-भिन्न समस्याओं पर विचार-मंथन होता है । इस प्रक्रिया में उस-उस प्रदेश का अंतरंग खुलता जाता है । अब, जब मैं तामिळनाडू का समाचार सुनता हँू या पढता हूँ तो नारायण और चन्दन पाल के साथ हुई चर्चा का । इस कारण परिस्थिति का निश्चित बोध होने में मदद मिलती है । संघर्ष वाहिनी में था, इसी कारण मैं पूरे देश में घूम सका । पूरे देश में मित्रों का एक जाल सा बुना गया । उसमे हिमालय के टिहिरी गढवाल का कुंवर प्रसून था (अभी-अभी उसकी मृत्यु हुई हैं), पूर्वांचल का टिकेन्द्र, उत्तरप्रदेश के वाराणसी का अरूण चौबे, लखनऊ का राजीव, इलाहाबाद का अरूण, रामधीरज, मुरादाबाद का राकेश, दिल्ली का हबीब अख्तर, बिहार के शुभमूर्ति, अरूण दास, अनिल प्रकाश, रमण, माणिमाला, कनक, कंचन, कारू, प्रभात हेमंत, नूतन, पंकज, प्रियदर्शी, मंथन, श्रीनिवास, अरूण मधोपुर, देवेन्द्र, देवनाथ, महादेव, पंचदेव, कलानंद, अशोक और अन्य कितने तो । मुंबई की चेतना, जतीन, शुभा, राजा देसाई, मिलिन्द, मनीष अवस्थी, मनिषा, जयन्त आदि राजस्थान से शैलेन्द्र, सवाईसिंग, मध्य प्रदेश से अरूण सिहारे (नामों की लम्बी सूचि बन जाएगी) । ये सब मित्र बने । इन सबके व्यवहार के अलग-अलग ढंग, बोलने की अलग-अलग शैलियाँ, अलग-अलग हिस्सों की अलग-अलगसमस्याएँ, भिन्न-भिन्न कार्यकर्ताओं का अलग-अलग दृष्टिकोण था । इन सबका अनुभव लेते हुए जीवन समृद्ध बना । वाहिनी के कारण पूरे देश में जो अनुभव मुझे प्राप्त हुआ, उससे कुछ बातों में मैं अन्यों से अधिक भाग्यशाली रहा हूँ।

‘धुनी तरुणाई’
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ : 160, कीमत : 150 रुपये
प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई - 431517 (महा.)

अनुवादक - ज्योतिराव लढ़के
चेतस, 22, बाजीप्रभू नगर, नागपूर-440033

चिन्तन-भारती - 1

वैश्विकरण तथा शिक्षाक्षेत्र - सुधीर पानसे

विश्वके बहुतांश राष्ट्रोंने पिछले दशकसे वैश्विकरण, उदारीकरण और खाजगीकरण की योजना को स्वीकारा है । इसलिए वर्तमान में स्पर्धाओं के आधारपर बाजारू अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रहीं है । ‘जियो और जीने दो’ की बजाय प्रतिस्पर्धी को खतम करो इस विचार से दुनियाग्रस्त हुई है । वैश्विकरण के गुणदोषों की चर्चा के चक्कर में ना जाते हुए अथवा उसे अपनाना या नहीं इस विवाद में ना जाते हुए वैश्विकरण के जमाने में हमारे देश को बनाये रखना हो तो अथवा स्पर्धा में कामयाब होना हो तो दूसरों की दुखती रग को पहचानकर, अपनी योग्यता को खोजकर हमारे कतृत्व को शिक्षाक्षेत्र में दिखा दिया है । हमारा लक्ष्य शिक्षा है । हमारी शिक्षा व्यवस्था ने विश्व के बराबर की शिक्षा संस्थाओंको खड़ा करके उनके बराबर के अध्यापक, संशोधक, छात्र निर्माण किये हैं । वर्तमान विश्व में ‘नॉलेज इण्डस्ट्रीको’ जो आवश्यक लगनेवाले कम्प्युटर तथा तंत्रज्ञान की जानकारी में हमने काफी कामयाबी हासिल की है । हमारी शिक्षा व्यवस्थाओं में बहुतांश सर्वसमावेशकता और साथही शिक्षा संस्थाओं की गुणवत्ता चिंता का विषय होने के बावजूद भी हमारे देश के युवकोंको वैश्विकरण के बाजार में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होना एक सुखदायक ही है ।

वैश्विकरण के इस युग में सरकारने जनकल्याणकारी योजनाएँ प्रस्तुत करके अपनी जिम्मेदारी ना बढे, गुणवत्ता बढाने के लिए समाज में स्पर्धाएँ होती रहीं । उच्च शिक्षा पर सरकार - खर्चा ना करे, केवल विद्यालयीन शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार की है । इस प्रकारकरी उनकी विचारधारा है । इस विचारधारा में अनेक त्रुटियाँ हैं । उच्च शिक्षा की ओरध्यान देना समाजकल्याण का काम है ऐसा ना सोचते हुए वैश्विकरण के इस युग में हम उसके आधारपर स्पर्धाओंमे कैसे सफल हो सकते हैं । इस दृष्टिसे हमें देखना चाहिए । उसीप्रकार लोकतंत्र के राज्यव्यवस्था में गरीब और मध्यको जीवन में जो एकमात्र आशा के किरण को खतम करके उच्चशिक्षा पर खर्चा कम करके कैसे चलेगा ? उससे साामिक तनाव उत्पन्न होगा । उसने बचपनसेही चुनिंदा बुद्धिमान छात्रों को ही अच्छी शिक्षा देने की कल्पना उचित नहीं है । इसलिए हमारे देश में सरकार को विद्यालयीन तथा उच्चशिक्षापर भी खर्चा करना आवश्यक मानना चाहिए वरना शिक्षा यह केवल अमीरोंकी बपौति होगी । होनहार होते हुए भी गरीबों को छोटे-छोटे उपयोगी कौशल्यों को सीखना पडेगा उन्हें नौकरियाँ ही करनी पडेगी ।

एकओर धन के अभाव में सरकार शिक्षा क्षेत्र से बाजू हट रही है और

दूसरीओर विदेशी शिक्षा संस्थाओंसे स्पर्धा करने के लिए तैयार रहो ऐसा भी कह रही है। शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और सर्वसमावेशकता इस तरहसे समझौता ना करते हुए स्पर्धाओंसे बचनेके उपाय अवश्य करें। उसीप्रकार शिक्षासेही छात्रोंको नौकरियाँ प्राप्त करके देनी होगी ऐसी अपेक्षा करना गलत साबित होगा। शिक्षा व्यवस्था यह छात्रोंको सक्षम करने का कार्य कर सकती है नौकरियाँ देने का काम अर्थव्यवस्था का है। वर्तमान स्पर्धा के इस युग में शिक्षा का उपयोग समाजकी समस्याओं को हल करने की इच्छा भी उसके मन में उत्पन्न नहीं हो रही है। उच्च शिक्षाप्राप्त तो ज्यादाही आत्मकेन्द्रीत बनते हुए दिखाई दे रहे हैं।

उपोषण, दलित, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, बढ़ती विषमता जैसी भयावह समस्याओं की लपटों मे हमारे अस्तित्व को बनाये रखना कठिन बनता जा रहा है। इसे छात्रोंको समझना होगा। उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार की नहीं है, उसके लिए दानशूर व्यक्तियोंकी ओरसे निधि इकट्ठी करें ऐसा करना भी उचित न होगा। शिक्षा के क्षेत्र को दान देते समय कई शर्ते रखी जाती हैं। वैश्विकरण के इसी मानसिकता के कारण शिक्षा सम्राटोंकी चिंता करने की बजाय उनका शोषण ही करते हुए नज़र आते हैं। आज के आर्थिक व्यवस्था की गाडी उच्चशिक्षा के बगैर आगे की ओर बढ ही नहीं सकती। फिर भी सामान्य जनता को ब्याज से पैसा निकालकर शिक्षा प्राप्त करो, बाजार में जो चढ़ाव–उतार हो रहा है उसका मुकाबला तुम्हें ही करना होगा, आपको जो संभव नहीं है ऐसी फीस भी दो, भविष्य में नौकरी तथा व्यवसाय को तुम्हें ही देखना होगा। पढ़लिखकर अर्थव्यवस्था के इस गाडी को चलाने के लिए मदद करनी होगी। धनवान को मुनाफा दिलाना होगा। शिक्षा प्राप्तिके लिए जो ब्याज आपने निकाला है उसे आपकोही वापिस करना होगा। इस तरह वैश्विकरण के कारण उत्पन्न हुई व्यवस्था जबरदस्तीसे बेगारी और गुलामगिरी से भी क्रूर तथा भयावह है।

उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों को निर्माण करने की कीमत छात्रोंको और उनके अभिभावकों को चुकानी पडेगी और फायदा वहाँ के धनवानों को, कारखानदारोंको, ब्यापारियोंको, कंपनियोंको, कंपनियो के मालिकोंको होगा। सच्चाई यह है कि सरकार के पास सत्ता और प्रबंध होने के कारण शिक्षा क्षेत्र ने जो बौद्धिक संपदा उत्पन्न की है उसकी कींमत बाजार से वसूल करके वह शिक्षा क्षेत्र को देने की व्यवस्था करनी यह 'स्वयं निर्भरता' का वास्तविक अर्थ है। छात्रों से अधिकाधिक फीस लेना नहीं बल्कि धनाभाव के कारण उच्चशिक्षापर होनेवाला खर्चा कम करने के बजाय सरकार को चाहिए कि वह अन्यत्र होनेवाला गैरजरूरी और अनुत्पादक खर्चा कम करे। लेकिन वैश्विकरण के इस युग में शिक्षा व्यवस्थापर अत्याधिक ध्यान देना आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित बातों

की ओर ध्यान देना आवश्यक है। इसे हम शिक्षा क्षेत्रोंके अधिकारोंकी सनद कहेंगे हर बच्चेको प्राथमिक शिक्षा वह भी उसकी इच्छानुसार प्राप्त करने का अवसर का लाभ लेनेका उसे अधिकार है। इसे स्वीकारना होगा। इसकेलिए निम्नलिखित अधिकारोंका भी स्वीकार करेंगे।

1) हमारी कामयाबी में विद्यालयीन और उच्चशिक्षा का योगदान महत्व का होने के कारण उन दोनोंपर विचार करें।

2) वैश्विकरण के इस युग में शिक्षा का क्षेत्र ही भारत को शक्तिमान बना सकता है। इसलिए उसे एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में घोषित करें।

3) विद्यालयीन शिक्षा के समान उच्चशिक्षापर होनेवाले खर्चे में वृद्धि हो।

4) गरीब तथा मध्यमवर्गीय छात्रोंकी शिक्षा की जिम्मेदारी सरकार ले।

5) विद्यालयीन शिक्षा की जिम्मेदारी राज्य सरकार तथा उच्चशिक्षा की जिम्मेदारी केन्द्र सरकारको चाहिए।

6)सरकार को चाहिए कि बौद्धिक संपदा का उचित मुआवजा समाज से लेकर शिक्षा क्षेत्रों कों दे।

7) राष्ट्रीय उत्पन्न में से 8 से 10 प्रतिशत रकम शिक्षा क्षेत्र पर खर्च करे।

8) शिक्षाक्षेत्र के लिए जमा राशिको विकसित प्रकारसे खर्च करे इसे तय करने का अधिकार शिक्षा क्षेत्रको ही होना चाहिए।

9) गरीब तथा मध्यमवर्गीय बुद्धिमान छात्रोंको ब्याज ना निकालते हुए पढ़ाई पूरी करने को आनी चाहिए।

10) शिक्षा पर जो खर्चा किया गया है। वह कल के लिए किया हुआ निवेश है। इस सत्य को स्वीकारें।

लोकतंत्र में सरकारकी इच्छाशक्ति को उत्पन्न करनें का कार्य लोकशिक्ति में होता है। उसका दर्शन हमें राजकर्ताओंके जनआंदोलन से होना चाहिए। यह अधिकार सबका है। इससे ही आज के विनाशक शैक्षिक योजनाओंका परिवर्तन करके यहाँ के गरीब और मध्यमवर्गीयों की आशा को जिंदा रखा जा सके और देश में सुअवसर का लाभ ले सकें।

हिंदी अनुवाद
डॉ.विजया वारद – रागा
उदगीर – 413 5117
जागतिकरण आणि शिक्षणक्षेत्र
लेखक : श्री सुधीर पान से लोकवाङ्मय गृह, मुंबई

भूखों की कविता

- के.जी.बालकृष्ण पिल्ले

बापूने कवीन्द्र रवीन्द्र को एक बार
एक पत्र में लिखा
सुन्दर चिड़ियाँ
उषा के आगमन पर महिमा के गीत
गाती हुई शून्य में अपने रंगीन पंखों
से उड़ान भरती हैं ।
ये चिडियाँ दिन भर का अपना भोजन
प्राप्त करती हैं और रात के आराम
के बाद आकाश में उडती हैं। इन की
रगों में पिछली रात नए रक्त का
संचार हो चुका है ।
मुझे ऐसे पक्षियों को देखने पर वेदना
भी हुई जो निर्बलता के कारण अपने
पंख फडफडाने का साहस भी नहीं
कर सकते ।
भारत के विस्तृत आकाश के नीचे
मानव पक्षी रात को सोने का ढोंग
करता है । भूखे पेट उसे नींद नहीं
आती और जब वह सुबह बिस्तर से
उठता है । तो उस की शक्ति पिछली
रात से कम हो जाती है । लाखों
मानव - पक्षियों को रातभर भूख-
प्यास पीड़ित रह कर जागरण करना
पड़ता है यह अपने अनुभव की अपनी
समझ की अपनी आँखों देखी अथक
दुख पूर्ण अवस्था है, कहानी है ।
कबीर के गीतों से
इस पीडित मानवता को सांत्वना दे
सकना असंभव है।
यह लक्षावधि भूखी मानवता हाथ
फैला कर जीवन के पंख फड़फड़ा कर
कराह कर
केवल एक कविता माँगती है ।
'पौष्टिक भोजन'
अपने काव्य के प्रति सच्चा रह कर
यदि कोई कवि आगामी कल के लिए
जिन्दा रहता है और दूसरों को भी
उस कल के लिए जीवित रहने का
आदेश देता है । तो वह हमारे चकित
चक्षुओं के सामने उन सुन्दर चिड़ियों
का सुन्दर चित्र खींचता है ।
जिनका मैंने उल्लेख किया है ।

(अवलंब - मंगल प्रभात के अप्रैल 2014 अंक में प्रकाशित विष्णु प्रभाकर का लेख'गांधीजी, साहित्यकार के रूप में')

-गीता भवन पेरूरकटा
पो.तिरू अनन्त पुरम्
695005 (केरल)

गतांक से आगे...

सभी समस्याओं की जड 'जाति' ही

-डॉ.मारुति शिंदे

दलित बहुजनों की यह स्थिति बदले, इसलिए भारतीय संविधान में, समान अवसर का तत्व मान्य किया गया । विधिमंडल, शिक्षा तथा नौकरियों में आरक्षित स्थानों का सूत्र स्वीकार किया गया । लेकिन इस संदर्भ में भी शासन-व्यवस्था, प्रशासन और न्यायालय के माध्यम से कई प्रश्न खडे हुए हैं । प्रमुख बात है कि ये आरक्षित स्थान सालों साल भरे ही नहीं जाते । इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है, सरकारी नौकरियों की स्थिति । शिक्षा क्षेत्र में आरक्षित स्थानों के कारण समता का तत्व नकारा जाता है, यह दलील देकर उच्च वर्गीय विद्यार्थी उसका विरोध करते है । इस विरोध का सकारात्मक परिणाम न मिलने पर कोर्ट में कई मामले दाखिल कर आरक्षित स्थानों को भरने का क्रियान्वयन रोक दिया जाता है । ओ.बी.सी.वर्ग में तो न्यायालय के माध्यम से 'क्रिमीलेयर' तत्व लागू कर के, थोडी आर्थिक सक्षमता प्राप्त करनेवालों को आरक्षण ही नकारा गया है । आरक्षित स्थानों के संदर्भ में, एक अलग ही समस्या डरा रही है । संविधान ने एम्.सी., एस.टी., व्ही. जे, एन्.टी.इन संवर्गों मे दलित (अस्पृश्य), आदिवासी, घुमन्तू, विमुक्त जातियों को अंतर्भूत किया है । लेकिन आज आर्थिक दृष्टि से पिछडे (कुछ तथाकथित) कई वर्ग के लोग भी उन्हें इन वर्गों में शामिल करने की मांग करते हैं । और राज्यकर्ता लोग राजकीय नफा-नुकसान देखकर उनकी मांग स्वीकार करते हैं । सवर्ण जाति का एस्.सी., एस्.टी., या एन्.टी. इन वर्गों में अंतर्भाव करने से उस.-उस संवर्ग के आरक्षित स्थानों पर नवीन अंतर्भूत जमात के उम्मीदवारों का चयन किया जाता है और मूल दलित, आदिवासी तथा घुमन्तू जाति के पात्र उम्मीदवारों को बाहर किया जाता है । चूँकि जातीयवादी उच्चपदस्थ प्रबंधक अस्पृश्यों और घुमन्तू जातियों को दूर रखना ही हितकारक समझते हैं । इस कारण रोस्टर पूरा भरने का दम भी भरा जा सकता है और दलितों से दूरी भी कायम रखी जा सकती है । इसका ठेठ फायदा उठाकर कुछ लोग एस्.सी., एस्.टी.के झूठे प्रमाणपत्र निकाल लेते हैं और आरक्षित स्थानों पर कळा जमा लेते हैं । परिणामतः दलित, आदिवासी और घुमन्तू जाति के उम्मीदवार वंचित रह जाते हैं । इसका एक दिलचस्प उदाहरण मेरे देखने में आया । वह इस प्रकार था -

शोलापुर जिले के एक वाणिज्य महाविद्यालय में प्राचार्य के पद पर, जो एस्.सी. संवर्ग के लिए आरक्षित है, एस्.सी. लिंगडेर यह महानुभाव विराजमान हैं । इन महोदय के पिताजी 'तेली' और लिंगडेर ऐसी तीन जातियों के प्रमाणपत्र है । ऐसे कई

उदाहरण महाराष्ट्र में ही नहीं तो अन्य राज्यों में भी मिलते हैं । यह बताने का उद्देश यही है कि यह सब अगर ऐसा ही चलता रहा तो कुछ दिन बाद रोस्टर के सभी बिन्दु तो भरे जाएंगे लेकिन वास्तव में दलित, आदिवासी आदि वर्गों के उम्मीदवारों को नौकरी नहीं मिलेगी । इसे जातीयवादियों का कारस्थान नहीं तो और क्या कहें ?

आज चुनाव से लेकर तो पद आवंटन तक सभी राजकीय व्यवहार जातीय दृष्टि से ही किये जाते हैं । सरकार बनाते समय भी मंत्री पद तक जाति के विचार के आधार पर ही दिये जाते हैं । इसका सबसे अच्छा उदाहरण है 2004 में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने का अवसर, जाति के कारण ही, एक व्यक्ति के हाथ से निकल गया । भले ही सुशीलकुमार पक्षनिष्ठा के कारण यह मान्य न करें । उत्तरप्रदेश में मायावती जी की मजबूरी है कि उन्हें बहुत सवर्ण जातियों का सहारा लेकर ही प्राप्त करना पडता है । उसके लिए उन्हें बाबासाहब के हाथी में गणेश का रूप देखना पडता है । यह सारे उदाहरण अभी-अभी के हैं लेकिन बात स्पष्ट करने वाले हैं । भारत में पंचायत राज का बड़ा बोलबाला है, लेकिन ग्रामपंचायत से लेकर जिला परिषद तक, नगर परिषद से लेकर महानगर पालिका तक दलित बहुजन प्रतिनिधियों की अवस्था क्या है? दलित आदिवासी समाज की महिला प्रतिनिधियों की अवस्था क्या है ? दलित-आदिवासी समाज की महिला प्रतिनिधियों की स्थिति कितनी विदारक है यह सुश्री कविता महाजन के 'ज' उपन्यास ने दुनिया के सामने लाया है । इसके विषय में और क्या कहें ?

मैं एक बात की ओर खास तौर पर आपका ध्यान खींचना चाहूँगा आजादी की प्राप्ति के पहले से कई उच्चवर्णीर्य उदारमतवादी लोग प्रगतिशील आंदोलन में कार्यरत है । राष्ट्र सेवा दल, समाजवादी, युक्रांद जैसी कई संस्थाएँ जातीयता के विरोध में परिवर्तन का काम करती हैं । लेकिन ऐसी संस्था में काम करनेवाले लोगों के आडे, अंत में, जातीय संस्कार ही आते हैं । ऐसा कहने का कारण स्पष्ट है । आजतक हम यह देखते आ रहे है कि 'समता' पर भाषण तो सभी देते हैं । लेकिन जाति नष्ट करने का कार्यक्रम किसी के भी पास नहीं है, इस वास्तवता को क्या हम नकार सकते हैं ? यह उच्च जातीय परिवर्तनवादियों के प्रति आक्षेप नहीं है लेकिन यह सच्चाई है । दो साल पूर्व शोलापुर में कम्युनिष्ट पक्ष के अधिवेशन में स्वयं सीताराम येचुरी जी ने स्वीकार किया था कि पनघट सबके लिए खुला करने जैसे संघर्ष में हम पीछे रहे हैं । इस संघर्ष में कम से कम अब तो हमें उतरना चाहिए । ऐसे कई उदाहरण हम दे सकेंगे । लेकिन हाल ही का एक उदाहरण देखना महत्त्वपूर्ण होगा । वर्ष 2005 में हुई 'शिवर्धर्म' की स्थापना । यह एक अच्छा उदाहरण है । महाराष्ट्र में मराठा समाज के श्री पुरुषोत्तम खेडेकर नाम के एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने ब्राह्मणों को विरोध करने के लिए 'मराठा सेवा संघ' नाम का संगठन बनाया । साथ में प्रबोधन का आंदोलन भी

जोर-शोर से चलाया । इस आंदोलन में सर्वश्री श्रीमान कोकाटे, प्रदीप साळूंखे, प्रभाकर पावडे, न्या.कोळसे पाटील जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति शामिल हुए । हिन्दु धर्म व्यवस्था के माध्यम से ब्राह्मणों ने हमें भ्रमिष्ट किया, हमारा नुकसान किया है । दलित मुस्लिमों को शत्रु बनाया । लेकिन अब हमारी समझ में आया है कि डॉ.आंबेडकर ही हमारा मार्गदर्शक है । मुस्लिम हमारे बन्धु है । हमें अज्ञान में रखनेवाले हिन्दु धर्म का हम त्याग करनेवाले हैं, ऐसी घोषणा भी उन्होंने की । लेकिन हम बौद्ध धर्म स्वीकार करेंगे । ऐसा कुछ उस घोषणा में नहीं था । उसके स्थान पर 'शिवधर्म' (एक नया धर्म) की स्थापना का पाखंड था। ऐसा भी घोषित किया गया कि हमारी शिवधर्म की आधारशिला बौद्ध धर्म ही है। अर्थात बौद्ध धर्म के तत्व लेकर शिवधर्म की स्थापना करेंगे, लेकिन बौद्ध धर्म नहीं अपनाएंगे। मेरी दृष्टि से इसका जातीय आधार पर विश्लेषण किया जा सकता है । डॉ.आंबेडकर ने 1956 में ही बौद्धधर्म स्वीकार किया था। अभी हमने बौद्ध धर्म को अपनाने का अर्थ होगा मराठों ने महार समाज के साथ जाना अपने आपको क्षत्रिय कहलाने वाले मराठों के मन को भाने वाली यह बात थोडे ही है। लेकिन यह जातीय आपाधापी मचाते समय उन्होंने आदरणीय डॉ.साळूंखे जी को ही अपनी चाल का मोहरा बनाया। डॉ.साळूंखे भी जाति का यह आग्रह टाल नहीं सके । यह जातीय वास्तविकता है।

इस सारे विवेचन से एक ही अर्थ निकलता है कि आज इक्किवसवीं सदी में भी भारत में धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक और राजकीय क्षेत्रों में होने वाले बदलाव और घटनाएँ जाति के आधार पर ही हो रही हैं । इन सारी गतिविधियों से जाति और अधिक मजबूत हो रही है । जाति की ही अस्मिता, पहचान, अस्तित्व माना जा रहा है । इन्हीं के मार्फत बाबासाहब का नाम लेते-लेते उनके नाम का उदो-उदो करते हुए, उनके विचारों की हत्या की जा रही है । आज भी एक राष्ट्र के रूप में, एकसंघ भारत खड़ा नहीं हो रहा । जाति के कारण ही देश का भारी नुकसान हो रहा है । भयानक निर्धनता, निरक्षरता, स्त्री-पुरुष भेद बालमृत्यू, गर्भवती माता मृत्यु, बालकों में कुपोषण, गंदी बस्तियाँ अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, असफल हुई शिक्षा व्यवस्था अनुत्तीर्ण हुए विश्वविद्यालय, स्त्रियों पर हो रहे अत्याचार, न्यायालयों की ढह गयी हुई प्रतिमा, नैतिक अधःपतन इन सारी समस्याओं का बोझ होते हुए हम 2020 वर्ष तक भारत को महासत्ता बनाने का सपना देख रहें हैं । कागज पर लिखा निर्देशांक दिखाकर यह सपना वास्तव में उतरेगा ऐसा हम सिद्ध भी करें, लेकिन इन समस्याओं का क्या करें, जिनके कारण मानव विकास का निर्देशांक ही ढहताजारहा है । इन सारी समस्याओं का कारण केवल जाति और जाति ही है । अर्थात जाति यह सारी समस्याओं की जड़ है ।

यह जाति किसी भी स्थिति में समाप्त नहीं होती । हमने तो मानो, इसकी

व्याख्या ही कर डाली है – जो जाती नहीं वह जाति है । अर्थात हम यह मानकर चल रहे हैं कि जाति–व्यवस्था समाप्त होनेवाली नहीं है । लेकिन सच बात यह है कि जाति व्यवस्था को हम ही समाप्त करना नहीं चाहते चूँ कि उसे धर्म ने मजबूती दी है । और धर्म का भूत हमारी गर्दन से उतरता नहीं । इसलिए अगर हमें जाति व्यवस्था को नष्ट करना हो तो प्रथर्म धर्म–संस्कारों को ही तोडना होगा । इस भारत भूमि में बुद्ध, कबीर, रोहिदास, तुकाराम, म.फुले, छ.शाहू महाराज, और डॉ.आंबेडकर जैसे महामानवों ने जाति प्रथा नष्ट करने के लिए जो संघर्ष चलाया वह आज तक जारी है । हम उस संघर्ष के सिपाही हैं, ऐसा अपने आप को बताते हैं । लेकिन जाति को सुदृढ करने का घृणित कार्य भी हम ही कर रहे हैं । क्यों कि फुले, शाहू, आंबेडकर इन्होंने बतायी हिम्मत हममें है ही नहीं । हम जन्म से ही धर्म–संस्कारों से बंधे हैं । फुले, शाहू, आंबेडकर इन्होंने धर्म की चौखट तोड़ी क्योंकि उन्होंने जान लिया था कि धर्म ने मजबूत बनायी जाति व्यवस्था, धर्म को तोड़े बिना हटेगी नहीं । इसी कारण डॉ.आंबेडकर ने अपनी पुस्तक ॲनिहिलेशन ऑफ कास्ट में जाति–प्रथा नष्ट करने के तीन उपाय सुझाएँ हैं –

1) धर्म ग्रंथों का प्रमाण्य नकारना ।
2) धर्म परिवर्तन विवाह ।
3) अन्तरजातीय विवाह ।

यह तीनों उपायों को क्रियान्वित करने के लिए डॉ.बाबासाहब ने 14 अक्तुबर 1956 को बौद्ध धर्म स्वीकार किया और जाति व्यवस्था नष्ट करने का मार्ग भी प्रशस्त किया । जाति यह आज केवल समस्या नहीं तो सारी समस्याओं की जड़ है । उसे नष्ट करना हो तो डॉ.आंबेडकर ने प्रशस्त किये मार्ग पर ही हमें मार्गस्थ होना होगा ।

अनुवादक — ज्योतिराव लढके, नागपुर
हिन्दी विभाग प्रमुख, वालचन्द कला व विज्ञानमहा विद्यालय शोलापूर
(साभार : विषमता निर्मूलन शिविर पुणे : अगस्त 2014)

आन्तर भारती प्रकाशन
'साने गुरुजी चित्रावली – 120 रू.'
'यति यदुनाथ – 50 रु.' 'साने गुरुजी विशेषांक – 50 रु.'
'आन्तर भारती गीतमाला – 15' 'कॅसेट/सी.डी.–30 रु.'
प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी – 413522 (महा.)
Mo.09823156777 E-mail:aryavidyavanshi@gmail.com

समाचार भारती - 1

निधर्मी होने का अधिकार उच्च न्यायालय का महत्त्वपूर्ण निर्णय

'भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म के पालन करने के साथ साथ कोई भी धर्म न पालते हुए निधर्मी रहने का मूलभूत अधिकार भी बहाल किया है । इसलिए केन्द्र या राज्य सरकार ने किसी को भी किसी भी सरकारी अर्ज में उनके धर्म की टिप्पणी करने की जबरदस्ती न करे, ऐसा महत्त्वपूर्ण आदेश मुंबई उच्च न्यायालयने दिया है । आप कोई भी धर्म नहीं मानते और किसी भी धर्म का अनुसरण नहीं करते, ऐसा कहने का प्रत्येक भारतीय को अधिकार है, ऐसा ही न्यायालयने लिखा है ।

'फुल गॉस्पेल चर्च ऑफ गॉड' नामक संस्था के डॉ.रणजित मोहिते, किशोर नाझरे और सुभाष रनावरे इन तीनों ने जो याचिका दी उसपर न्यायमूर्ति अभय ओक और ए.एस.चांदूरकर के खंडपीठ ने यह महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया । इन तीनों ने सरकारी अर्जपर धर्मसंबंधी खाने में 'निधर्मी ऐसा लिखा था, परन्तु उस कारण से उनके अर्ज अस्वीकार कर दिए । इसलिए तीनों ने स्वतंत्र याचिका करते हुए इस विवाद को न्यायालय के सामने लाया था, भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को अपनी इच्दा नुसार जीवन जीने और किसी भी धर्म के पालन करने का अधिकार दिया है । भारत निरपेक्ष देश है । इसलिए सरका र का कोई भी धर्म नहीं है । केवल हमें कौनसे धर्म का पालन करना है या नहीं यह निर्धारित करने का अधिकार प्रत्येक नागरिक को दिया हुआ है । इसलिए अमुक एक व्यक्ति ने अमुक एक धर्म का पालन करना चाहिए ऐसा कायदा नहीं कहता । इसके विपरीत दूसरा धर्म स्वीकार करके उसका अनुसरण करने का तथा किसी धर्म के न पालन करते हुए निधर्मी कहलवाने का अधिकार दिया है । ऐसा न्यायालय ने महत्तवपूर्ण निर्णय देते हुए स्पष्ट किया है ।

कुल मिलाकर धर्म का राजकारण और धर्म का बाजार करने का आज का वातावरण में न्यायालय का यह निर्णय अत्यन्त स्वागतार्ह और संविधान के सत्व को स्पष्ट दिखाने वाला है । विशेषतः पुरोगामी नागरिकों को, कार्यकर्ताओं को कई बार दिक्कत का लगने वाला यह धर्म का कॉलम तथा उसकी सख्ती मेंसे युक्ति मिलने की संभावना निर्माण हुई है । धर्म का रवाना सख्ती का होनेसे तथा निधर्मी लिखने की शासकय कार्यालय इजाजत न देने से 'मानवता', 'नास्तिक' ऐसे कुछ पर्याय कई लोग उपयोग में लाते है । परन्तु यह रूढार्थ में धर्म के पर्यायी शब्द नहीं है । यह उनको भी मालूम है । अब इस पर्याय को न्यायालय ने ही मान्य करने की वजह से तथा उसे अधोरेखित करने की वजह से आई हुई स्पष्टता का उपयोग एक पुरोगामी कदम रखने में होगा ऐसी आशा करने में आपत्ती नहीं ।

हिन्दी प्रस्तूति : डॉ.मधुश्री आर्य
आंदोलन से साभार

विशेष आलेख - 1

दया नहीं सम्मान की अधिकारी है नारी

-अजय टंकरवाला

आदिकाल से नारी ने अपने त्याग, प्रेम, श्रद्धा तथा चरित्रबल से संस्कृति का उत्थान किया है । नारी के मातृत्त्व से मानव का जन्म हुआ है और नारी के प्रेमत्त्व से मानव जाति का नियमन हो पाया है । वैदिक इतिहास को देखें, समग्र इतिहास नारी के उज्ज्वल त्याग, प्रेम, श्रद्धा, समाज सेवा, आत्म विकास और तप का ही रूप है । प्रत्येक क्षेत्र में नारियों ने गौरवपूर्ण कार्य किए हैं ।

हमारे गरिमापूर्ण इतिहास में जहाँ एक ओर यह वेद मन्त्र का भाग प्रसिद्ध हुआ है । ''यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता'' तो वहीं दूसरी ओर समाज में व्याप्त कुरीतियों ने आज उस इतिहास पर प्रश्न-चिन्ह लगा दिए हैं । सामयिक परिस्थितियों से उत्पन्न परम्पराएं धर्म का आधार बन गई हैं और उन परम्पराओं की अर्गलाओं में बंदिनी नारी सिसक-सिसक कर दम तोड़ रही है ।

झूठे अहंकार, अधिकार प्रदर्शन और लोभ ने भयानक तांडव किए हैं, कहीं दहेज के रूप में, कही अशिक्षा और गुलामी के रूप में । पुरुष ने नारी के समर्पण और त्याग का मूल्यांकन न करते हुए उसके साथ असमानता और असहयोग करना ही अपना कर्तव्य समझ लिया । परंपराओं के रूप में जो जहर हमें मिला उसी के परिणाम स्वरूप लड़के और लड़की में अंतर समझा जाने लगा । दुःख तब होता है जब बाल्य-काल से ही लड़का और लड़की में ये संस्कार हमारी माताओं और बहनों द्वारा ही दिए जाते हैं और लड़की कितनी ही गुणवती और सुशील क्यों न हो फिर भी प्राथमिकता लड़के को ही दी जाती है । इसका कारण है अशिक्षा, हमारी वो परम्पराएं जहाँ पर हमारे भविष्य की गारण्टी केवल मात्र लड़कों के हाथ में रहती है ।

नारी और पुरुष की भेदक रेखा कहीं भी दृष्टिगत नहीं होती । हमारा प्राचीन इतिहास नारी के तेज, ओज विद्वता की गौरव पूर्ण गाथाओं से मंडित है काल के प्रवाह से पुरुष प्रधान समाज की कुंठित शैवाल के नीचे यह इतिहास छिप गया । नारी को केवल मात्र एक प्रसाधन, खिलौना बनाकर विवशता की खाई में धकेल दिया गया । जिस नारी से पोषण, संस्कार व जीवन मिला, उसी का अपमान जीवन का ध्येय बन गया । मनमाने नियम निर्धारित कर उसे पिंजरे का कैदी बना दिया गया ।

भ्रूण हत्या का महान पाप आज बढ़ता ही जा रहा है । हमें मातृ शक्ति की महता को स्थापित कर इस समस्या का निराकरण करना है । देवदासी प्रथा हमारी

संस्कृति का कलंक है । आज भी कम ही सही पर प्रचलित है । पुरुषों के अधिक काम करने पर भी महिलाओं के वेतन में समानता न होना । इस पर भी हमें चिंतन करना होगा । ग्रामीण परिप्रेक्ष्य के माता-पिता लड़कियों को पढ़ाने में रूचि बहुत कम लेते हैं और लड़कों को पढ़ाने में अधिक । नारी साक्षरता से देश प्रगति की ओर अग्रसर होगा । अश्लील विज्ञापनों का प्रचार-प्रसार आज के युग में बढ़ता जा रहा है । नारियों की उत्तेजक मुद्राएं क्या नारी के प्राचीन वैभव को सुरक्षित रख रही हैं ? यह सोचना आज आवश्यक हो गया है ।

भारतीय संस्कृति में माता को तीर्थ माना गया - 'मातृदेवो भव'। भारतीय नारी ईश्वर की अभिव्यक्ति है और उसका सम्पूर्ण जीवन इस विचार से ओत-प्रोत है कि वह मां है । मातृत्व में ही भारतीय नारी का पूर्णत्त्व निहित है । 'कुपुत्र जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' पुत्र-कुपुत्र हो सकता है पर माता कुमाता नहीं हो सकती ।

मां शब्द बहुत ही प्यारा शब्द है । मां शब्द से समूचे शरीर में अमृत संचार हो जाता है । जिसे भी हमने श्रद्धा से मां पुकारा उसे मां के रूप में ही देखा जाता है । यही हमारी संस्कृति है । मां जिसने वात्सल्य के अमृत से खून को दुग्ध में परिवर्तित कर शिशु को इस वसुन्धरा पर प्रथम आहार देकर जीवन दान दिया । अपनी नींद, भूख सब त्याग शिशु के लिए अपना समस्त सुख व वैभव उत्सर्ग किया । जीवन पाठशाला की प्रथम गुरु मां ने गर्भावस्था से ही उन्नत संस्कारों की विरासत प्रदान कर सृजन की अनमोल कृति प्रस्तुत की । जब भी पीड़ा, तनाव, संकट आया मां को ही पुकारा । यही कारण है कि इतने उत्सर्ग के उपरान्त मां जैसे पावन रिश्ते पर भी प्रश्नचिन्ह खड़े हैं । मां के वात्सल्य और करूणा का आज कोई मूल्यांकन नहीं रह गया है । मां की वृद्धावस्था आज के सुपुत्र पर बोझ बनती जा रही है । सेवा के पावन अर्ध्य से पांव पखारना तो दूर की बात है आज तो पास बैठकर उसके दुःख में सहभागी बनना भी उसका कर्तव्य नहीं रहा ।

इतिहास साक्षी है कि माता की ममतामयी गोद में वीर रस से ओत-प्रोत लोरियों ने ऐसे रण बांकुरों को जन्म दिया, जिनके शौर्य की पावन गाथाएं आज भी दिगदिगांत को आलोकित कर रही हैं । प्रकाश स्तम्भ बनकर मानव मात्र को प्रेरणा दे रही हैं ।

संस्कारों का अभाव मानव को पतन के गहरे गर्त में धकेलता है जिसके भयावह परिणाम परिवार, समाज, देश और राष्ट्र भोगता है । मैं, विश्व की सभी माताओं से अपील करता हूँ कि वह अपने वात्सल्य के आंचल में ममता व प्रेम से मानवता की मूतियाँ गढ़कर इस दुनियाँ को वीरान होने से बचा लें । क्लबों, होटलों की विलासितापूर्ण संस्कृति से बाहर होकर अच्छे, स्वस्थ, बुद्धिमान एवं सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण नागरिकों की पौध

तैयार करें, जिससे सम्पूर्ण विश्व में आतंकवाद, तनाव, भय, पीड़ा, अन्याय, अत्याचार समाप्त हो और मनुर्भव की बात चरितार्थ हो ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी सम्मान के लिए जो सुधार के कार्य किए इसी का फल है कि नारी सुशिक्षित हुई और इसी कारण अधिक रूप से सुशिक्षित भी हुई । भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री जी ने अजमेर निर्वाण उत्सव पर कहा था अगर स्वामी दयानन्द ना होते तो में आज भारत की प्रधानमन्त्री ना होती । यह था इस सुधार का प्रमाण परन्तु आज नारी शिक्षित तो हुई । आर्थिक रूप से सुरक्षित भी परन्तु समाज में फैली कुरीतियों के कारण एवं पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से हमारी महिलायें सुरक्षित नहीं हो पाई । हर आंख माँ रूपी-बहन रूपी महिला पर गिद्ध की तरह पड़ रही है । बलात्कार और छेड़छाड़ की शिकार होती महिला आज असहाय होकर रह गई है । आज फिर आर्य समाज को दयानन्द के मानस पुत्र होने के नाते संगठित हो इस क्षेत्र में पहल करनी चाहिए । दयानन्द जी ने जिस नारी को अपने समय की कुरीतियों से बाहर निकाला था आज वह फिर आर्य समाज की और आशा से देख रही हैं । हमारा इतिहास गौरवता से परिपूर्ण है, हमारा वर्तमान उज्ज्वल है, हमारा भविष्य उज्ज्वल है हम संगठित होकर साहस से आगे बढ़ेंगे तभी इन कुरीतियों का पूर्ण विनाश कर सकेंगे । स्वस्थ समाज रचना से ही देश का भविष्य सुखद व सुन्दर बनेगा ।

-अजय टंकारावाला

आदरणीय महोदय,

सादर प्रणाम/आंतर भारती अंक-१२ (दिसम्बर-२०१४) तथा अंक - १ (जनवरी - २०१५) प्राप्त हुवे, धन्यवाद । मनन चिन्तन से परिपूर्ण भारतीय समाज, सभ्यता कला, संस्कृति की प्रबोधिनी 'आंतर भारती' बाल विकास कल्याण की संस्कारात्मक दस्तावेज हैं । हिन्दी साहित्य जगत में एक अनोखी पहचान बनाने में पत्रिका कामयाब हुयी है । उज्ज्वल भविष्य की दिशादर्शक, निश्चित ध्येय के प्रति समर्पित आज कल बहुत कम मात्रा में पत्रिका दिखाई देती हैं । आपकी कुशल संपादन शैली, उत्कृष्ट समर्पित भावना ने पत्रिका को काफी ऊँचे धरातल पर पहुँचा दिया हैं । आपका संपादकीय 'सुशासन का स्वरूप कैसा हो ? तथा विशेष लेख 'बंधुआ मुक्ति एवं बचपन बचाओ आंदोलन का सफर लंबा 'उपदेशात्मक एवं जानकारीयुक्त हैं।

आचार्य संजीव वर्मा सलिल की कविता '''बस्ते घर से गए पर...'' वास्तविक घटनाही को प्रस्तुत करती है जो एक सत्य है। स्कूल, कॉलेज के ग्रंथालय के लिए पत्रिका उपयोगी तथा अति आवश्यक है । उत्तरोत्तर समृद्धि एवं विकास हेतु मन पूर्वक शुभेच्छा!

भवदीय
डॉ.प्रकाश वि.जीवने

अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच-शाखा नांदेड, शिक्षण अधिकार कार्यशाला - विवरण

अखिल भारतीय शिक्षा अधिकार मंच (नांदेड) और पीपल्स कॉलेज नांदेड के संयुक्त तत्वावधान में दि. 23 नवम्बर 2014 को एक दिवसीय शिक्षण अधिकार कार्यशाला स्व.नरहर कुरुंदकर सभागृह में ली गई । अपने उद्घाटन भाषण में भूतपूर्व संसद-सदस्य डॉ.व्यंकटेश काब्दे ने कहा कि, ''शासकों का शिक्षण व्यवस्था की तरफ अक्षम्य लापरवाही होने पर थी श्रेष्ठ जनों की पाठशाला में 25 % जगह सुरक्षित रखने की शर्त समता की विरोधी है, समता के लिए समान शिक्षण पद्धति स्वीकार करना, शिक्षण पर खर्च बढाना, रिक्त स्थानों की पूर्ती करना आवश्यक है'', सरकार ने अपनी नीति और प्राथमिकता में परिवर्तन करने की आवश्यकता पर जोर दिया । इस अवसरपर प्रमुख अतिथि नांदेड जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अभिमन्यु काळे उपस्थित थे अपने भाषण में उन्होंने RTE के संबंध में शिक्षक विद्यार्थी प्रमाण, 25% आरक्षण सुविधाओंपर जितनी चर्चा होती है उतनी बच्चों के अधिकारोंपर नहीं होती इसपर खेद व्यक्त कर बच्चों के संवेदनता की तरफ हम सबने अधिक ध्यान देना चाहिए ऐसी अपेक्षा व्यक्त की । उद्घाटन सत्र का अध्यक्षीय उपसंहार करते हुए प्राचार्य डॉ.व्ही.एन.इंगोले ने ड्रापआऊट की बजाय पास आऊट की समस्या कितनी गंभीर है इस तरफ उपस्थितों के ध्यान खींचकर सरकारी पाठशाला सही में अच्छी तरह चलती नहीं या वैसा संदेह निर्माण किया जाता है ।

इस बात का परीक्षण करने की आवश्यकता दर्शायी। कार्यशाला के दूसरे सत्र में शिक्षण अधिकार कानून' कमियां और आगे की दिशा ' इस विषय पर अध्ययन पूर्ण प्रस्तुति करते हुए प्रा.शरद जावडेकर (पुणे) ते स्वतंत्रता के पहले कुछ संस्थाओं में शिक्षण सम्बन्धी प्रगतीशील कानून कैसे थे यह बताकर भारत सरकार ने 86 वा संविधान संशोधन बालकों को मुक्त व अनिवार्य शिक्षण का अधिकार - कानून 2009 में मुक्त शिक्षण क्या है ? इसकी व्याख्या नहीं थी, 0 से 6 वर्ष तक के बच्चों के शिक्षण के विषय में कोई भी व्यवस्था नहीं थी, बच्चों की आयु संबंधी सरकार की परस्पर विरोधी भूमिका और शासन न करनेवालों के लिए शिक्षा का अभाव ऐसी कई

कमियों को दर्शाया अब आंदोलन ने सरकार को सब पाठशालाओं में मुफ्त देने के संदर्भ में आवश्यक सुधार की मांग करनी चाहिए ऐसा कहा और डॉ.एम.ए.अन्सारी ने पाठशाला बाह्य बच्चों को पाठशाला में लाने के लिए कानून को असफलता मिली कह कर केवल शिक्षण शुल्क छोड़कर अन्य सारी फीसें इन पालकों को ही भरनी पड़ती हैं। इसलिए मुफ्त शिक्षण शुद्ध हवाई बातें है पर कानून कायदे को अमल में लाने की कोई व्यवस्था नहीं है पर शिकायत निवारण की व्यवस्था है, पर वह योग्य पद्धतीसे अस्तित्व में न होने का अनुभव हुआ । सत्राध्यक्ष डॉ.अशोक सिद्धेवाड ने सत्ता का वर्गानुसार स्वरूप देखते हुए समाज के राजकीय शिक्षण बनाने के महत्त्व तथा समता से घनिष्ठ नाता रखने एकीकरण से शैक्षणिक प्रश्नों का हल निकालने का आंदोलन करना संभव होगा ऐसा कहा ।

कार्यशाला के तीसरे सत्र में डॉ.मिलिन्द वाघ (नाशिक) ने ''उच्च शिक्षण विषयक नए कानून और निजीकरण का प्रश्न, इस विषय पर बोलते हुए कहा कि 'वैश्वीकरण की वजह से भारत के शिक्षणक्षेत्र पर उदार मतवादी आक्रमण बढ़ रहे हैं और वैश्विक पूंजीपतियों का सपना अतिरिक्त पैसा यहाँ लगाना है । शिक्षण का निजीकरण अर्थात उच्च स्तर का अर्थशोषण तथा नए उपनिवेशवाद का प्रारंभ सरकारी संस्थाओं में से दिए जाने वाले शिक्षण अच्छे दर्जे के होने पर भी सरकार जानबूझकर निजीकरण की भूमिका ले रही है । ऐसे समय में बहुजन आंदोलन ने समान पाठशाला का आग्रह करना चाहिए तथा व्यवस्था की शुद्धता पर जोर देना चाहिए' सत्राध्यक्ष डॉ. दिलीप चव्हाण ने शिक्षण का प्रश्न गंभीर है कहकर उपस्थितों को शैक्षणिक कानून की तरफ श्रद्धा से न सही पर, आलोचनात्मक दृष्टि से देखें ऐसा आवाहन किया । अन्त में उपस्थित पालक, समाज, शिक्षक पाठशाला और शासन ऐसा पांच गटों में विभाग करके RTE के संदर्भ में भूमिका क्या हो इसकी चर्चा करते हुए स्वाती आदाडे बालाजी कोरडे, नवीन पठाण, प्रा.विठ्ठल दहिफळे, प्रा.घुले, डॉ.डी.एन.मोरे, डॉ.अमोल काळे, डॉ.व्ही.एस.सुकाळे इत्यादि ने विवरण प्रस्तुत किया, इसके लिए प्राचार्य डॉ.व्ही.एन.इंगले ने समन्वय की भूमिका अदा की, उपस्थितों की संख्या और सहभाग तथा चर्चा का सत्र को देखकर कार्यशाला यशस्वी होने की प्रतिक्रिया बहुत से लोगों ने डॉ.व्ही.एन.इंगोले को कहा। श्रीमान सदाशिवराव पाटील, डॉ.तसनीम पटेल, उपप्राचार्य डॉ.सी.के हरनावले, प्राचार्य डॉ.विभूते, डॉ.बालाजी कोम्पलवार, डॉ.ठाकुर डॉ.विकाससुकाळे, डॉ.अजय गव्हाणे, डॉ.आर.एम.जाधव, श्री.संदीप गायकवाड आदि भी उपस्थित थे । कार्यशाला की

सफलता के लिए डॉ.व्ही.एन.इंगोले, श्री एच.पी.कांबळे, डॉ.अनंत राऊत इंजि.भीमराव हाटकर, स्वाती आदाडे, बालाजी कोरडे, डॉ.दिलीप चव्हाण, नवीन पठाण, डॉ.बालाजी वडवले, डॉ.मुकुंद कवडे इत्यादि ने परिश्रम किया ।

डॉ.अशोक सिद्धेवाड

राष्ट्रीय संघटक, समाजवादी अध्यापक सभा.

अखिल भारतीय शिक्षा संघर्ष यात्रा - भोपाल परिसमाप्ति समारोह

डॉ.अनिल सद्गोपाल के नेतृत्त्व में अपने देश के पांच जगह से 2 नव्ह. 2014 को चलकर उसकी समाप्ति समारोह भोपाल में 4 दिस 2014 को शहाजानी पार्क में सम्पन्न हुआ । इस अखिल भारतीय शिक्षा संघर्ष यात्रा में अखिल भारतीय समाजवादी अध्यापक सभा, लोकायत आदि संगठन शामिल हुए । देशभर से निकली हुई इस शिक्षण यात्रा ने सब विद्यार्थियों को के.जी.टूपीजी, मुफ्त समान तथा गुणात्मक शिक्षण अपने आसपास की पाठशालामें ही अवसर मिले ऐसी जागृति की ।

भोपाल के इतिहास में ही नहीं तो सारे देश की दृष्टि में दिसम्बर का दिन सुवर्ण अक्षरों में लिखा जाए ऐसा क्रांतिदिन है । इस परिषद के लिए तमिलनाडु, आंध्र तेलंगाना, झारखंड, जम्मू-काश्मीर, पंजाब, बिहार, ओरिसा, आसाम, नागालँड महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश इत्यादि विविध राज्यों से प्रतिनिधि उपस्थित थे । भारत की विविधता का एक रोमांचकारी अनुभव प्रत्यक्षित हुआ । इस विविधता में से शिक्षण की समानता के लिए प्रत्येक व्यक्ति लालायित था । मंच को आद्य शिक्षिका क्रांति ज्योति सावित्रीबाई फुले के नाम देकर उस आहाते को डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर का नाम दिया गया । प्रातः 9 बजे भोपाल टाकीज से शाहजानी पार्कतक भव्य शिक्षण मोर्चा निकाला गया । उसमें लगभग तीन हजार से अधिक शिक्षण प्रेमी सहभागी थे । विविध रंगोंके विविध भाषाओं में, शिक्षण संबंधी घोषणाओं के तरुते, परदे लेकर यात्रा अनुशासन में चल रही थी । विविध राज्यों के, विविध वेशभूषा में, विविध भाषाओं के नारों से भोपाल गूंज उठा और भोपाल निवासी आश्चर्य चकित हो गए ।

सभा के प्रांगण में सारे कार्यक्रमों के बॅनर्स, पोस्टर्स तख्तियां लटकाई हुई थी । मंचपर प्रत्येक राज्य के विविध भाषा के गीत, विविध प्रकार के वाद्यों की गूंज में पेश किया गया, इन समूह गीतों से सहज स्वाभाविकता के उत्कट दर्शन हो रहे थे । डॉ.अनिल सद्गोपाल ने प्रत्येक स्थान से निकली यात्र के मध्य जो मशाल धारी प्रमुख थे उनका स्वागत किया । महाराष्ट्र से निकली शिक्षण यात्रियों में मशाल पकड़ने का अवसर मुझे मिलने की वजह से मैं गद्गद हो गई, पुणे, नासिक, साक्री इन स्थानों से मिलकर

समाजवादी अध्यापक सभा के 22 कार्यकर्ता भोपाल के मेले मे शामिल हुए थे, उस समय यात्रा के संबंध में बोलने समय कहां था, कि वर्ष 2008 में, 17 सितंबर से 23 अक्तूबर 2006, इन 36 दिनों में महाराष्ट्र के 35 जिलो में से मा. भाई वैद्य के कुशल नेतृत्त्व में पहली शिक्षण जनजागृति यात्रा निकाली गई थी । केवल महाराष्ट्र तक सीमित थी, पर उस यात्रा से प्रभावित होकर डॉ.अनिल सद्गोपाल को इस देशव्यापी यात्रा की प्रेरणा मिली और आज इस शिक्षण यात्रा की परिसमाप्ति समारोह के लिए हम सब उपस्थित है । इस आकर्षक मशाल के स्वागत के बाद प्रत्येक यात्रा के प्रमुख कार्यकर्ताओंने अपनी यात्रा के अनुभव बोले । प्रत्येक के अनुभव बहुत मजेदार थे । बोलके थे । प्रत्यक्ष आंदोलन में गए बिना यह समझ नहीं सकते जैसे आग बिना जल नहीं सकते यह सच है। पूरा दिन कार्यक्रम चलते थे । बीच-बीच में गीतों का आनन्द आता था, विविध भाषाओंके मनोरंजन कार्यक्रमों में महाराष्ट्र की एक संस्था ने शिक्षण की आज की स्थिति का वर्णन करने वाली एक नाटिका ओ अत्यन्त हृदयस्पर्शी थी पर उसमें शिक्षण की अनेक समस्याओं का दिग्दर्शन कुशलता से प्रस्तुत किया । रमेश पटनाईक ने उत्तमरीति से सूत्रसंचलन किया, सभी कार्यकर्ता मन से परिश्रम कर रहे थे । सभा की जगह पर ही भोजन के पेकेट्स दिए गए थे । फिर भी सफाई पर अत्यन्त कड़ी नजर रखी गई । पूरा परिसर अत्यन्त स्वच्छ था । उपस्थित लोगों को आने पर बिल्ले देने से भोजन वितरण पानी की थै लिया आदि का वितरण बहुत अच्छे ढंग से किया गया । आसपास पुस्तकों के स्टॉल पर पुस्तके तथा सी.डी. की खूब विक्री हो रही थी । बीच-बीच में शिक्षण संबंधी नारों से वातावरण गूंज रहा था ।

विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि बहुभाषा शिक्षण के प्रस्ताव सादर किए गए उनका संकलन करके एक पुस्तिका निकाली जाने वाली है । अनेक उपयोगी शिक्षण सूचनाएँ दी गईं । पत्रकार उपस्थित थे पर अपने पास जैसे फोटोग्राफर्स की भीड़ उमड़ती है वैसा दृश्य नहीं था । सारी आवश्यक साधन सामग्री थी पर सादगी पूर्ण था । किसी प्रकार का दिखावा तथा आडंबर नही था । तीन चार हजार लोगों की उत्तम व्यवस्था करने का प्रयत्न सभी संगठनों के कार्यकर्ता कर रहे थे, मा.सद्गोपाल जैसे ध्येय के दिवाने तथा सभी संगठनो की कार्यकर्ता लगन से ही शिक्षण विचार चक्र देशभर में प्रसारित हुआ । आगे के कदम की तरफ अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है । कारण गर्म तवे पर रोटी जल्दी सेकी जा सकती है ।

विशाखा खैरे
महासचिव, अ.भा.समाजवादी अध्यापक सभा.
हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

आंतर भारती दिवस

(पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह)

१० मई २०१५

इसबार आसाम में, विशेष आयोजन

आयोजक

श्री हरीश भट्ट
कोकिला विकास आश्रम
ग्रा.पो.सोनपुर वाया-गोहपुर - ७८४१६८
जि.सोनीतपुर (आसाम)
harishbhatt132@gmail.com
Mo.09435563879/09435183391

10 मार्च से पूर्व आरक्षण करवा लें । देश के किसी भी स्थान से 'हावडा ब्रिज/सिलीगुडी/जलपाईगुडी स्टेशन पहुँचे ।

दार्जिलिंग देखना हो तो दिनभर लगेगा। दिन में दार्जिलिंग देखकर रात में जलपाईगुडी/सिलीगुडी आकर वहाँ से गुवहाटी-गोहपुर के लिए रेल में बैठें गोहपुर से सोनपुर आयोजक आपको ले जाएंगे, इस तरह 10 की प्रातः तक सोनपुर पहुँचना है। इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखने 7 दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रू. 7000 लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा । केवल 25 लोगों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू. भारत दर्शन के लिए अतः रू. 7000,10 मार्च तक भेजकर आरक्षण करवाएं ।

11 मई से उत्तर पूर्वी प्रदेश की यात्रा प्रारंभ होगी सोनपुर से इटानगर से अरूणाचल से फिर सोनपुर से दीमापुर से काजीरंगा से माजुली बेट से दीमापुर से इंफाल से मणिपुर दर्शन से शिलांग (मेघालय) से गुवाहाटी 17 मई को देखकर अपने घर के लिए वापसी (गुवाहाटी से)। पैसे भरें (रू. 7000/-)
हर्षदकुमार वासुदेव रावल, एस.बी.आय. रानिप (अहमदाबाद)
A/C. No. 30230807451 IFSC SBIN 0007476
यात्रा संयोजक : हर्षदभाई रावल 08141973341
e-mail : harshadraval70@gmail.com